प्रयाग महात्म्यः

श्रीमती प्रतिभा गर्ग
अध्यक्ष
श्री अगरचन्द नाहटा शोध संस्था, बीकानेर

वन्दना

शुण्डा दण्डे मोदकं धारयन्तं, करणोच्चालैः पयदा वारयन्तं।
नेत्र प्रान्ते सच्चिदानन्द दन्तं, वन्देऽहं श्री विघ्ननाशं गणेशं ॥

जहाँ गङ्गा है गोविन्द वहीं, गोविन्द जहाँ वहाँ गङ्गा है।
गङ्गा गोविन्द के दर्शन से, घन धाम पवित्र मन चङ्गा है ॥
जन मन से घन से भक्ती से, सेवा कर उस सुखदाई की।
जीवन पवित्र हो जायगा, जय बोलो गङ्गा माई की ॥

जिस समय धर्मक्षेत्र रणभूमि से विजय लक्ष्मी ग्रहण कर युधिष्ठिरजी महाराज अपनी राजधानी हस्तिनापुर में आकर बसे; और राज वैभव तथा आनन्द का उपभोग करने लगे उस समय अनायास एक दिन दुर्योधनादि भाताओं के वियोग के कारण शोक सागर में निमग्न हुए धर्म धुरन्धर महाराज युधिष्ठिरजी कोई ऐसा मार्ग, जप, तप, तीर्थ, स्नान, योग जानने की चिन्ता करने लगे जिससे पाप क्षय हों और चित्त को धैर्य्य तथा शान्ति मिले। इतने में काशी आदि तीर्थों में भ्रमण करते हुए महर्षि मारकण्डेयजी हस्तिनापुरी की राज सभा में आये। मारकण्डेयजी को आता देख सब ने उठ कर साष्टांग दण्डवत की। युधिष्ठिरजी बोले ! आज मेरा जन्म सफल हुआ, मेरे अहोभाग्य हैं जो आपने मुझे घर बैठे दर्शन दिये और मुझे शोक- सागर में डूबने से बचाया।

तत्पश्चात् सर्व प्रथम ऋषिवर के चरण धो पादोदक लिया और आतिथ्य सत्कार कर आदर पूर्वक आसन पर बिठा, अपने शोक निवृत्ति का उपाय पूछने लगे। सब वृतान्त सुनने के पश्चात् मारकण्डेय जी बोले हे राजन् ! क्षत्रियों

को क्षात्रधर्म ग्रहण कर युद्ध करने तथा योद्धाओं को मारने से कभी पाप नहीं लगता इस लिये आप शोक को त्याग दीजिये और भ्रातृ वियोग तथा पापों के क्षय के लिये तीर्थ स्नान कीजिये। यह सुन राजा बड़े प्रसन्न हुए और हाथ जोड़ कर उत्तमोत्तम और पवित्र तीर्थ का नाम पूछने लगे।

मारकण्डेय जी बोले ! राजन् सब तीर्थों में श्रेष्ठ तीर्थ श्री प्रयागराज है। जहाँ के स्नान दान, कल्पवास और देह त्याग करने से मनुष्य सब पातकों से मुक्त होकर अनन्त फल पाता है। यह सुन साक्षात् धर्ममूर्ति युधिष्ठिरजी महाराज भगवान् मारकण्डेयजी से शंका-समाधान करने लगे। महाराज आप अन्य तीर्थों के अतिरिक्त प्रयागराज की अत्यधिक प्रशंसा क्यों करते हैं ? यह सुन कर मारकण्डेयजी कहने लगे। राजन् सुनिये ! प्रलय काल के समय जब सूर्य,चन्द्र, पवन आदि सब नष्ट प्रायः हो जाता है और केवल समुद्र ही शेष रह जाता है, उस समय स्वयं विष्णु भगवान् अक्षय-वट तले शयन करते हैं और देव ऋषि, गंधर्व, सिद्ध, चारण, ब्रह्मा, रुद्र, दिग्गज, पितृ, नाग, पवित्र सरिता और सम्पूर्ण तीर्थ यहीं आकर विष्णु भगवान् के निकट विराजते हैं।

हे शूर शार्दूल भूपति प्रयागराज से पुनीत क्षेत्र त्रिलोकी में भी दूसरा कोई नहीं है। तीर्थराज का केवल नाम श्रवण करने से ही पाप रूपी पक्षी पलायन कर जाते हैं और नाम संकीर्तन से तो महापातक नष्ट हो जाते हैं। प्रयाग क्षेत्र की रज एवं गङ्गा, यमुना सरस्वती तथा त्रिवेणी स्पर्शित वायु के स्पर्श मात्र से प्राणी घोर पापों से मुक्त हो जाता है। त्रिवेणी पर अभिषेक करने से राजसूय और अश्वमेध यज्ञ के समान फल मिलता है। हे कुरुनन्दन साठ करोड़ दश हजार तीर्थ प्रयागराज के समीप हैं। प्रयाग में प्राण त्याग. करने से जो गति योगियों की होती है वही उस प्राणी की होती है। और वह कैवल्य पद को प्राप्त होता है, जो देवताओं को भी दुर्लभ है। हे राजन् अक्षयवट के पास वास करने और प्राण त्याग करने से ब्रहा लोक मिलता है और जब उसका पुण्य क्षय हो जाता है तो वह किसी धनाढ्य के यहाँ जन्म लेकर सांसारिक सुख भोगता है और लक्ष्मी उसकी दासी बन कर रहती है।